चींटी चलती है
चींटी चलती है चीनी लेकर चींटी चलती है...
चींटी रुकती है तो चीनी रुकती है
चींटी चलती है तो चीनी चलती है
रस्ते में एक और चींटी मिल जाती है...
देखके चीनी का दाना खिल जाती है
चींटी तो फिर चींटी होती है
चीनी की दावत मीठी होती है
फिर? चींटी चलती है चीनी खाकर...
चींटी चलती है
कविता: सुशील शुक्ल
चित्र: तापोशी घोषाल

दरवाज़े पर दुम

दस चूहे
दरवाज़े पर आ
हिला रहे थे दुम

बिल्ली चीखी-
घर के अन्दर
कैसे आए तुम?

कविता: प्रभात   चित्र: समरेश चैटर्जी

दर्ज़ी आए दूर से, बाँधा ऊँट खजूर से

गए बज़ार दवाई ली
संग चाय के खाई ली
मन में आया चूसें आम
सुनके लौटे ऊँचे दाम

ऊँट को खोलेंगे खजूर से
उससे बोलेंगे ज़रूर से
अम्मी एकदम सही कही हैं
आम में अब वो बात नहीं है

एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

कविता: सुशील शुक्ल
चित्र: प्रिया कुरियन

दावत

आरज़ू को चॉक खाना पसन्द है।
मुझे गीली मिट्टी।
ध्रुव को सीमेंट कुतरने में बड़ा मज़ा आता है। और परम तो अपनी कॉपी के कई पन्ने सफाचट कर चुका है।
हमने कल मेरे घर दावत रखी है।
चॉक की सब्ज़ी होगी।
कागज़ की बिरयानी।
सीमेंट की दाल होगी।
मिट्टी की खीर।
बड़ा मज़ा आएगा ऐसी अनोखी दावत में।

इकतारा तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

कहानी: नेहा सिंह
चित्र: सोनाली बिस्वास

धान लगाई है
अबकी खेत में हमने
अपनी जान लगाई है।

 एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

कविता: सुशील शुक्ल   चित्र: तापोशी घोषाल

धीरे धीरे नदिया बहती है
वह जाने क्या मछली से कहती है!
धीरे धीरे नदिया बहती है
मछली कुछ नदिया से कहती है
धीरे धीरे नदिया बहती है
वह जाने क्या चिड़िया से कहती है!
धीरे धीरे नदिया बहती है
चिड़िया कुछ नदिया से कहती है
धीरे धीरे नदिया बहती है
मुझे पता है बादल से वह क्या कहती है
धीरे धीरे नदिया बहती है
तुम्हें पता है बादल से वह क्या कहती है?
धीरे धीरे नदिया बहती है
कविता: यायावर

दोना पत्तल
दोना पत्तल पत्ते की
दो ना पत्तल पत्ते की
पत्ती एक एक बित्ते की
कोई न पूछे कित्ते की
बित्ता थोड़ा बड़ा है
बड़ा दही में पड़ा है
कविताः सुशील शुक्ल
चित्रः पार्थो सेनगुप्ता
एकलव्य
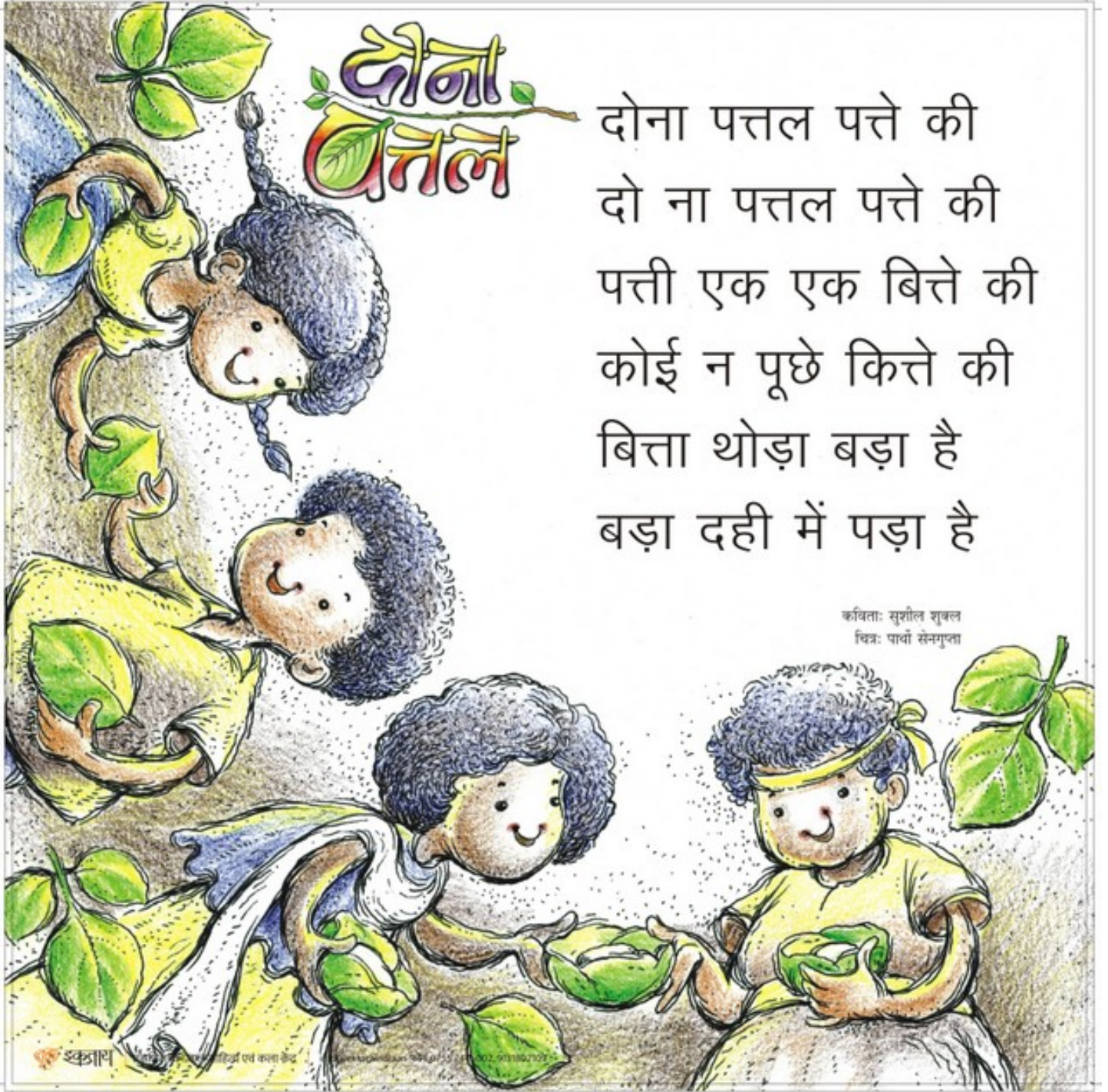
ईख बोली
ईख खेत की बोली
अपने पास वाली ईख से
मेरे ऊपर क्यों गिरती हो
खड़ी रहो ना ठीक से
कविता: प्रभात
चित्र: सुजाशा दासगुप्ता

इक बिजली की नोंक लगी
ऊनी बादल को
उधड़ के तागा-तागा
बादल बरस गया
कविता: गुलज़ार
चित्र: तापोशी घोषाल
एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
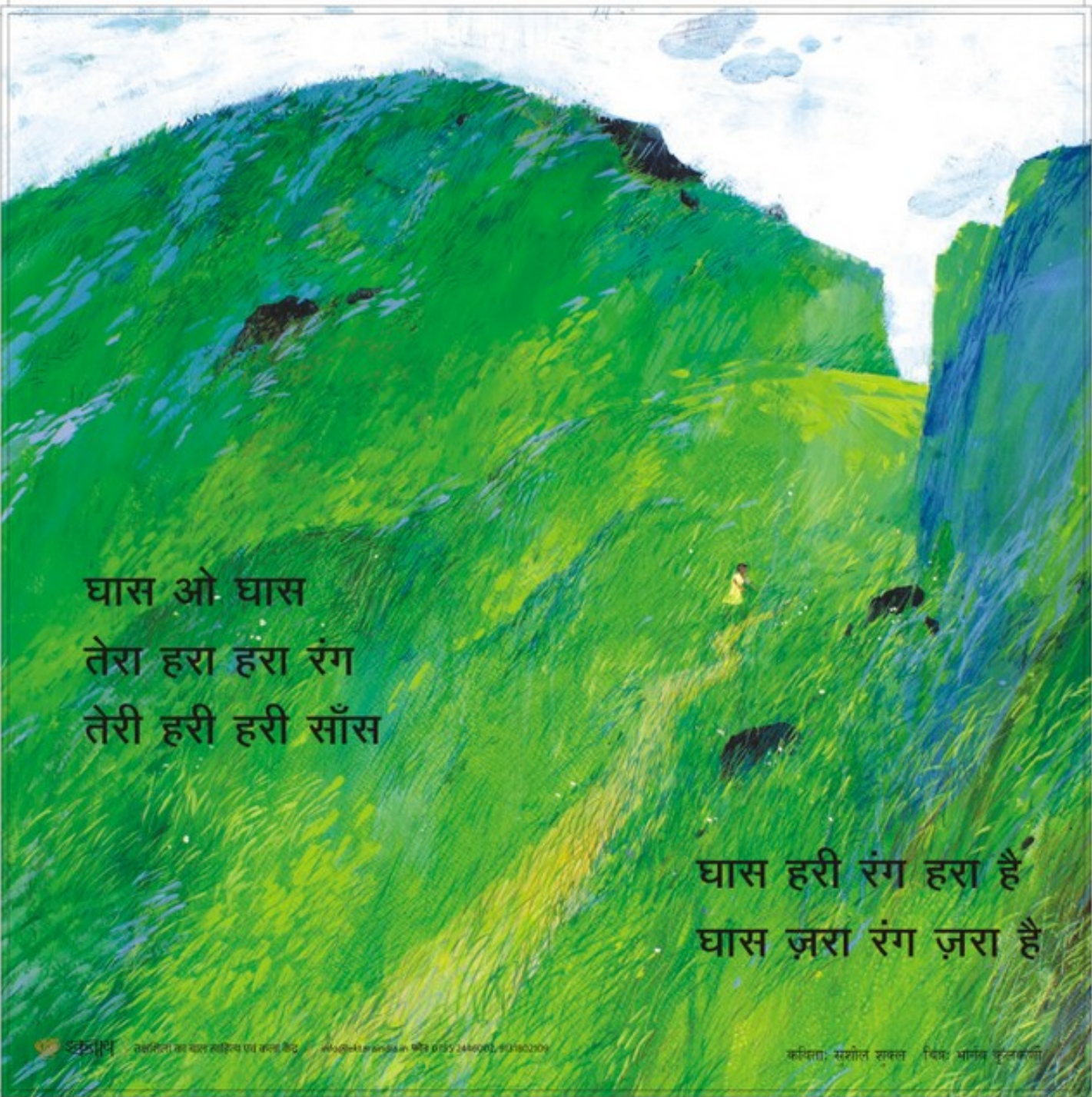
एक दिन...
देर से पहुँची मैं स्कूल
एकदम चिल एकदम कूल
सर ने मेरा बैग उतारा
और दिया चम्पा का फूल
कविता: सुशील शुक्ल
चित्र: वन्दना बिष्ट
इकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

फुग्गा

फुग्गों का लेके एक ढेर
देखो आया है शमशेर

हरे बैंगनी लाल सफेद
रंगों के कितने हैं भेद

कोई लम्बा कोई गोल
लाओ पैसा ले लो मोल

मुट्ठी में लो इनकी डोर
इन्हें घुमाओ चारों ओर

हाथों से दो इन्हें उछाल
लेकिन छूना खूब सम्भाल

पड़ा किसी के ऊपर ज़ोर
एक ज़ोर का होगा शोर

गुब्बारा फट जाएगा
खेल खतम हो जाएगा।

कविता: सर्वेश्वरदयाल सक्सेना   चित्र: देवब्रत घोष

घास ओ घास
तेरा हरा हरा रंग
तेरी हरी हरी साँस
घास हरी रंग हरा है
घास ज़रा रंग ज़रा है
एकतारा
कविता: सुशील शुक्ल चित्र: भार्गव कुलकर्णी

प्लीज़ गाड़ी स्पीड
में न लै जाएँ।
यहाँ सै गिलहरियाँ
सड़क क्रास करती हैं।
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
चित्र: प्रिया कुरियन

बड़े जतन से बना के गोला
पूरी पृथ्वी को लुढ़काए
लिए जा रहा है गुबरैला
गुबरैला
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
कविता: श्याम सुशील
चित्र: अवनीश सोनी
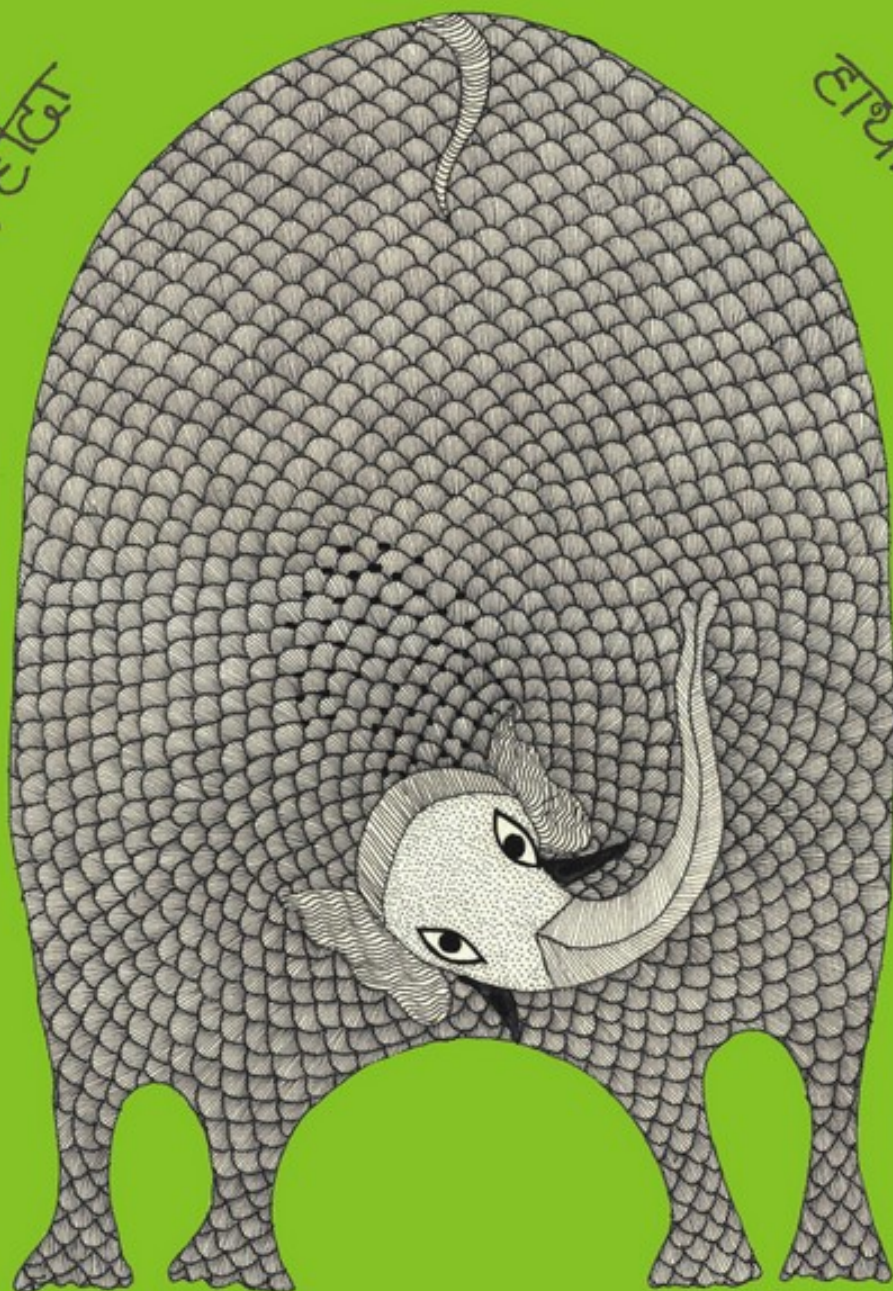
हल्लम हल्लम हौदा
हाथी चल्लम चल्लम
कविता: श्री प्रसाद
चित्र: सुभाष व्याम
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

हरा धान का खेत हवा ने
चल-चल कर घूमा
हर पौधे को गले लगाया
हर पत्ता चूमा
कविता: सुशील शुक्ल
चित्र: अवनीश सोनी
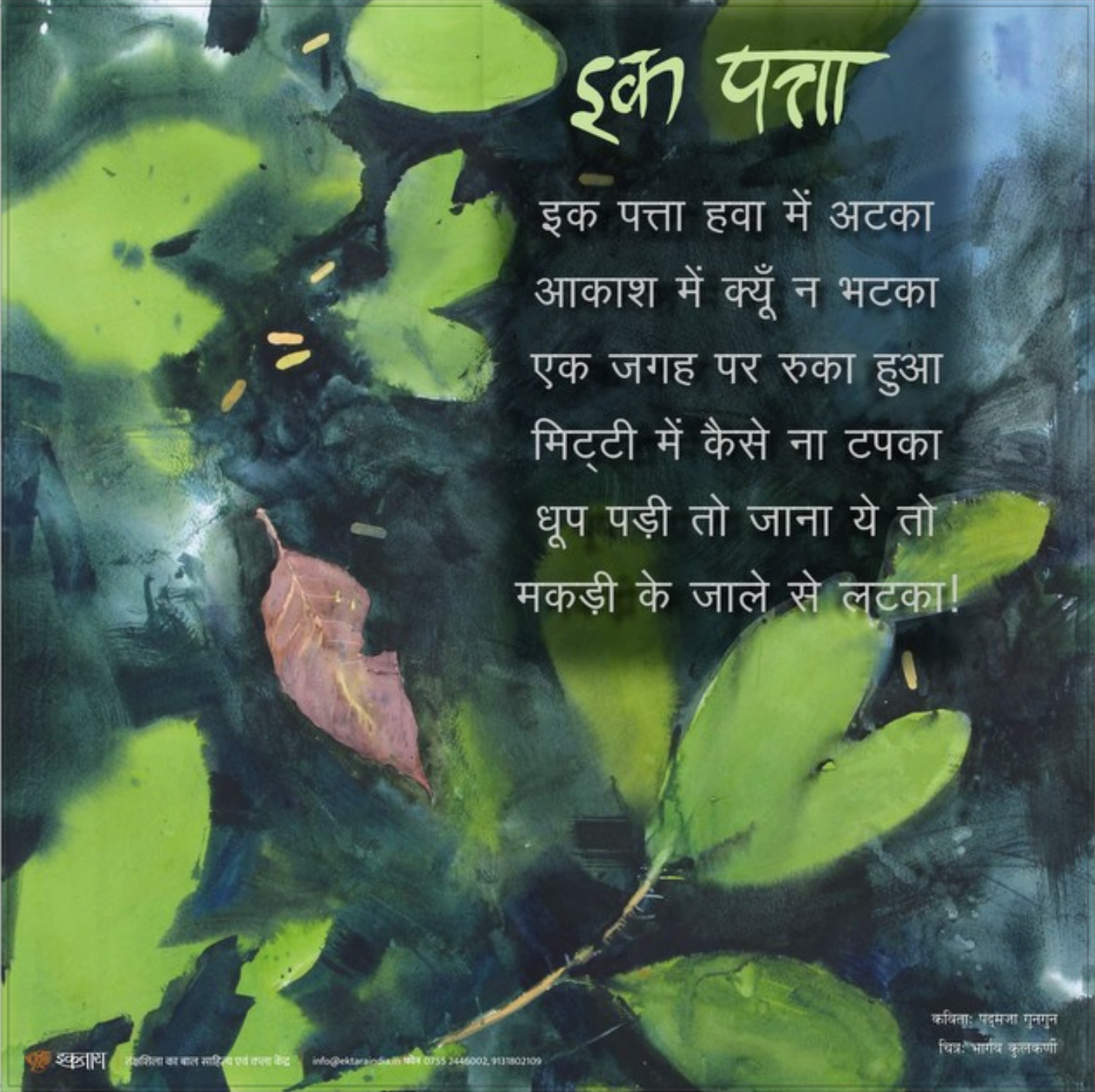
हाथी और चींटी
हाथी चिंघाड़ा
जंगल गूँज गया
चींटी चिल्लाई
किसी ने ना सुना
हाथी रोया
नदी बह गई
चींटी रोई
बूँद तक न बही
हाथी ने फूँका
आँधी आ गई
चींटी ने फूँका
पत्ती तक न हिली
हाथी छुपा
सबको दिखा
चींटी छुपी
किसी को ना दिखी
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
कविता: प्रमोद पाठक
चित्र: सुजाशा दासगुप्ता

इक पत्ता
इक पत्ता हवा में अटका
आकाश में क्यूँ न भटका
एक जगह पर रुका हुआ
मिट्टी में कैसे ना टपका
धूप पड़ी तो जाना ये तो
मकड़ी के जाले से लटका!
कविताः पद्मजा गुनगुन
चित्रः भार्गव कुलकर्णी
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

इस्माइल आखिर क्यों भागा ?
इस्माइल सर पर पैर रख भागा, ऐसा भागा... ऐसा भागा कि सड़क पर एक ने पूछा, "क्या हुआ? भूत देख लिया क्या?" "नहीं" बोल कर इस्माइल भागा।
दूसरे ने पूछा, "क्या हुआ? पुलिस पीछे पड़ी है क्या?" "नहीं" बोल कर इस्माइल भागा। तीसरे ने पूछा, "रेस की प्रैक्टिस कर रहे हो?"
"ट्रेन पकड़ने जा रहे हो?"
"किसी का पीछा कर रहे हो?" "नहीं" बोलकर इस्माइल भागा और पेड़ पर चढ़ गया।
सबने पूछा, "क्या हुआ?"
इस्माइल पेड़ पर से चिल्लाया "घर पर करेले की सब्ज़ी बनी है।"
कहानी: नेहा सिंह चित्र: तापोशी घोषाल

जुगनू भाई, जुगनू भाई
कहाँ चले?
जहाँ अँधेरा छाया,
हम तो वहीं चले।
जुगनू भाई,
अँधियारे में क्यों जाते?
भूली-भटकी तितली को
घर पहुँचाते।
जुगनू भाई,
किसकी टॉर्च चुराई है?
हमने तो यह चमक
जनम से पाई है।
जुगनू भाई,
हमको भी चमकाओगे?
चमकोगे जब
काम किसी के आओगे।
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
कविता: बालस्वरूप राही चित्र: अवनीश सोनी

केंचुआ
चलता देखो अगर केंचुआ,
दिखता बिलकुल रबर केंचुआ
कीचड़-पानी में घुसता जब
हो जाता तर-बतर केंचुआ
कितना भी चीखो-चिल्लाओ
रहता है बेखबर केंचुआ
पता न चलता कहाँ से आता
जाता है फिर किधर केंचुआ
कविता: डॉ. अरशद खान चित्र: निहारिका शेनॉय

एक केंकड़ा बहुत बड़ा
छींक रहा था पड़ा-पड़ा
सर्द हवा के आने से
हुआ ज़ुकाम नहाने से
दरियाई घोड़ा छींका
घासों में घोंघा छींका
मछली छींकी पानी में
काँपे फूल कहानी में।
कविता: प्रभात
चित्र: मनोज
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002

केले
गली गली में ठेले
केले ले लो केले
पैसे हैं न धेले
कैसे ले लूँ केले?
कविता: अनवारे इस्लाम
चित्र: तापोषी घोषाल

केरल के केले
केरल का पानी
केरल की नावें
लम्बी पुरानी
केरल के हाथी
केरल के चावल
केरल की नदियाँ
केरल के बादल
है इनकी लम्बी
लम्बी कहानी
केरल के केले
केरल का पानी
केरल के केले
कविता: प्रयाग शुक्ल
चित्र: जगदीश जोशी

खाई दाल
खाई दाल
मिर्च लाल
पीटे गाल
नोचे बाल
बुरा हाल
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
कविता: शिवचरण सरोहा
चित्र: बन्दना बिष्ट

मार दूँ ?
मारूँगा तो तकलीफ होगी ।
जब मर ही जाएगा तो क्या तकलीफ़ होगी !
... पर मरने से ठीक पहले तो होगी !
पर इसने मेरा क्या बिगाड़ा है ।
... पर बिगाड़ सकता है ।
... जब बिगाड़ेगा तो देखेंगे ।
तब तक बहुत देर हो चुकी होगी ।
... मारूँगा तो मर जाएगा । फिर इधर उधर नहीं घूम सकेगा ।
... पर मर जाएगा तो भगवान जी के पास जाएगा । वहाँ ... मज़े करेगा ।
क्या करूँ ?
कविता: सतीनाथ षडंगी
चित्र: तापोशी घोषाल

लहराती इठलाती पूँछ
उठती गिरती जाती पूँछ
देख के ऐसे चौंक-सी जाए
अपनी ही बलखाती पूँछ
जैसे कोई और ही बिल्ली
इसकी पकड़ हिलाती पूँछ
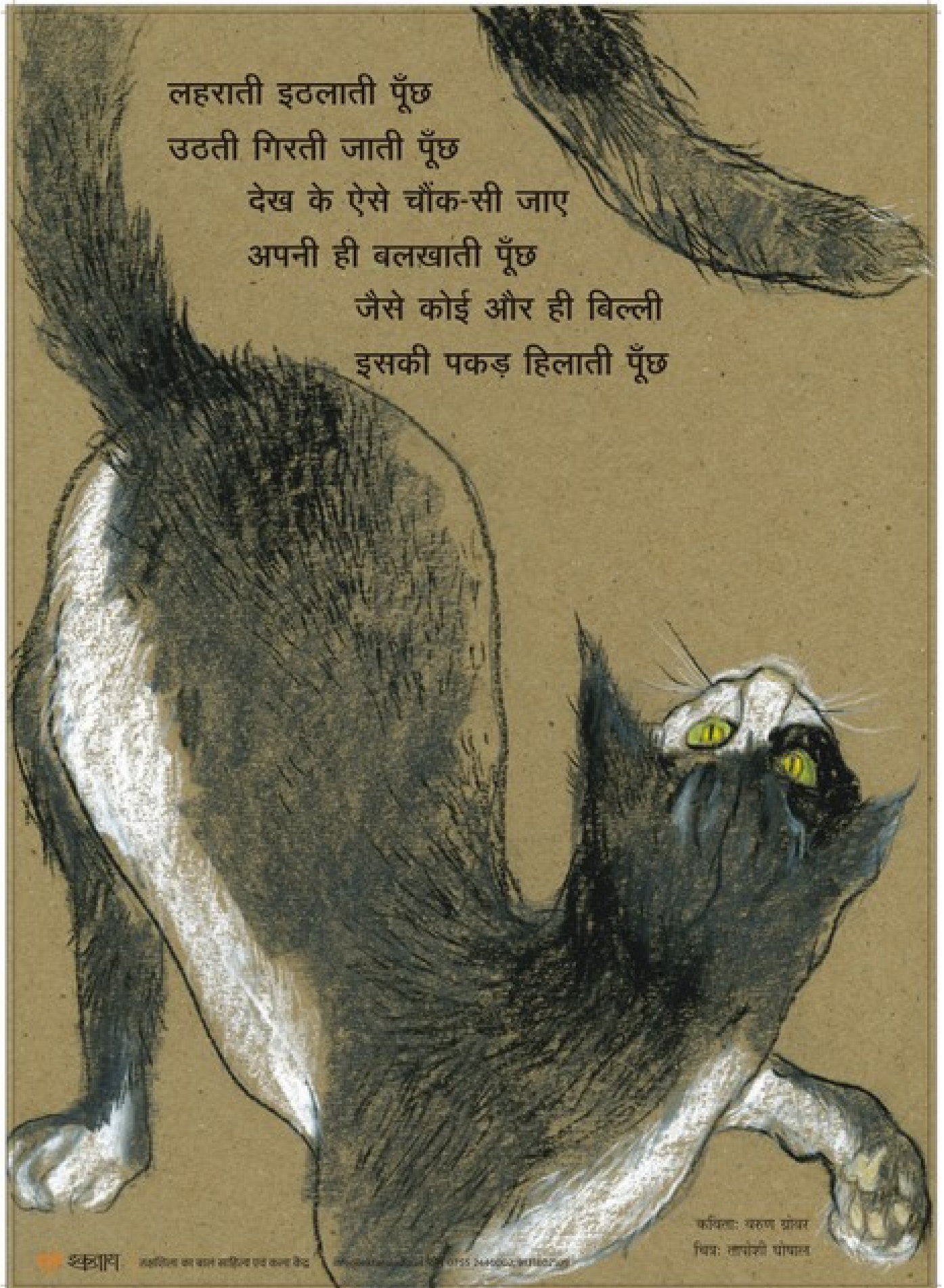
लक्कड़ टक्कड़
दिल से नर्म
ज़ुबाँ के अक्खड़
तीन घुमक्कड़
तीनों फक्कड़
झेल रहे थे
धुआँ-धक्कड़
भूख लगी
तीनों को जक्कड़
आया तेज़
हवा का झक्कड़
उसमें उड़कर
आए लक्कड़
लक्कड़ में
बैठे थे मक्कड़
मक्कड़ सेंक रहे थे
टक्कड़
फक्कड़ देख रहे थे
टक्कड़
कविता: प्रभात

माचिस गिल्ली
सूखी तिल्ली
बरसा शिमला
बह गई दिल्ली
कविता: वरुण ग्रोवर
चित्र: प्रिया कुरियन

माशा अल्ला
कभी न खाऊँ मैं रसगुल्ला
कभी न चाहूँ दही का भल्ला
देख के घर में करम कल्ला
मारे खुशी के करूँ मैं हल्ला
गाजर मुझे है बेहद भाती
पर हलुवे के पास न जाती
जामुन काले खूब उड़ाती
गुलाब जामुन पर एक न खाती
मैं कहती हूँ खुल्लम खुल्ला
मेरी पसन्द है माशा अल्ला
कविता: कमला भसीन
चित्र: सुजाशा दासगुप्ता
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

खट खट खट
हुआ लिफ्ट में
पावर कट
मोबाइल में
टावर कट
भालू दरवाज़े को पीटे
खट खट खट
खट खट खट
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
कविता: प्रभात
चित्र: हबीब अली

मुर्गी माँ

मुर्गी माँ घर से निकली
बस्ता ले बाज़ार चली

बच्चे बोले चें चें चें
अम्मा हम भी साथ चलें

कविता: निरंकार देव सेवक
चित्र: शोभा घारे

एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
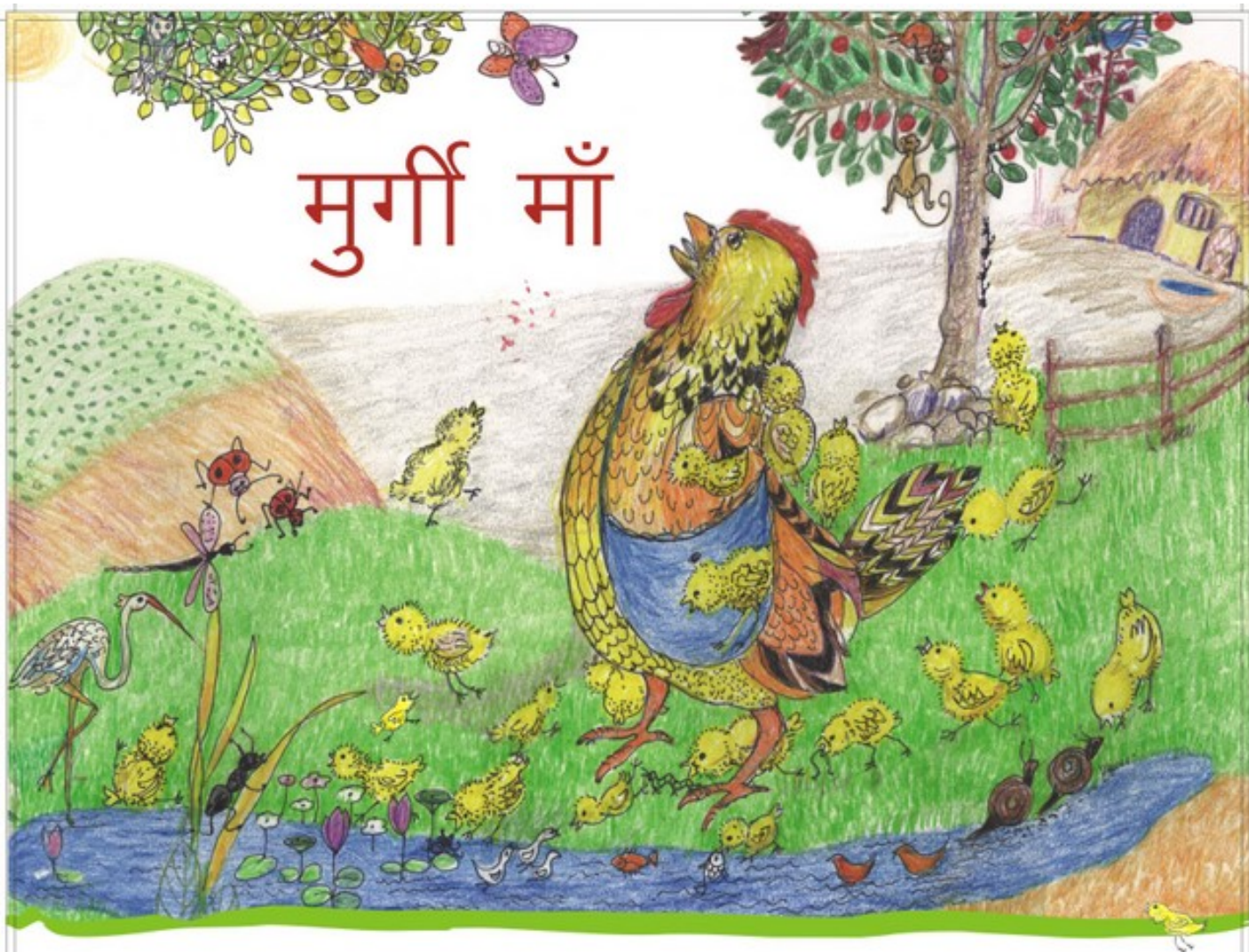
नानी
हर इतवार को नानी आती हैं
बिरयानी खाऊँगी वो फरमाती हैं
अम्मी साइकिल लेके जाती हैं
मुझे कैरियर पर बैठाती हैं
लौटके हम फिर चौक से आते हैं
गोलगप्पे शेखू के खाते हैं
पापा अलसाए से उठते हैं
हम चारों फिर किचन में जुटते हैं।
कविता: सुशील शुक्ल
चित्र: तापोशी घोषाल

पहली बार
एक अण्डे को फोड़ मैंने
पहली बार आमलेट बनाया
प्याज़, हरी मिर्च को डाल
तवे पर पकाया
डबलरोटी, कैचअप के साथ
फिर मैंने आमलेट खाया
वाह, कैसा स्वाद भरा आमलेट
मैंने पहली बार बनाया
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
कविता: विशाखा चंचानी
चित्र: तापोशी घोषाल
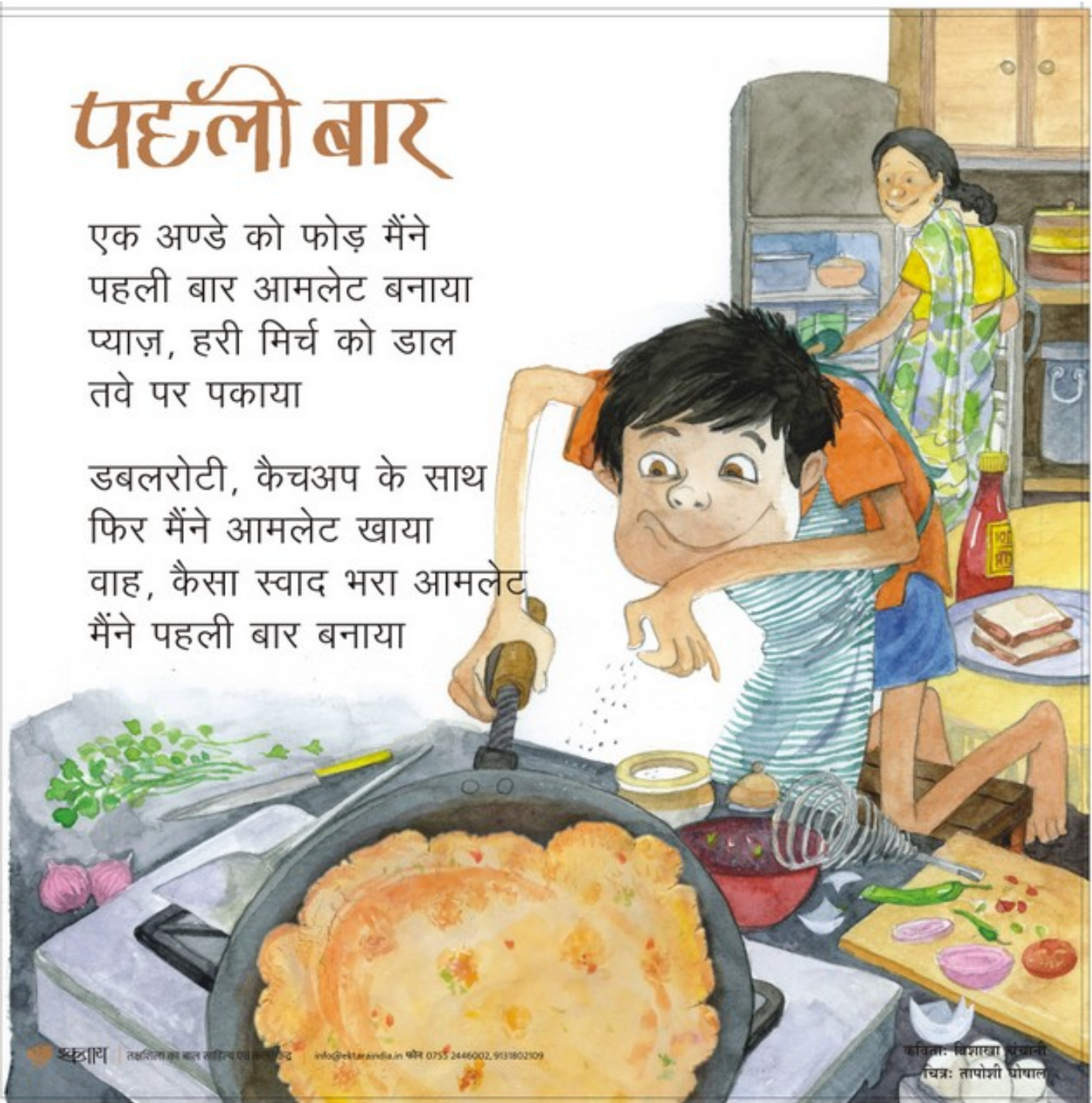
टूटी पेंसिल
छिल छिल छिल
गई हवा में
वो घुल मिल
छोड़ गई एक
काला तिल।
टूटी पेंसिल
कविता: प्रयाग शुक्ल
चित्र: प्रोइती रॉय
इकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
0755 2446002, 9131802109

फूल घड़ी
तीन काँटों जड़ी है
समय का फूल घड़ी है
निकली सैर सपाटे पर
तितली बैठी काँटे पर
कविताः सुशील शुक्ल चन्दन यादव
चित्रः विजेन्द्र सिंह
एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

बबूल
छाए मेघ अषाढ़ के
खिल-खिल गए बबूल
चाँदी जैसे शूल हैं
सोने जैसे फूल
कविता: विनोद पदरज
चित्र: नीलेश गहलोत

नोक-झोंक

दीदी! मुझे गुस्सा मत दिला
क्या कर लेगा?

मैं तुझे चुहिया बना दूँगा
मैं तेरी किताबें कुतर डालूँगी

मैं तुझे मधुमक्खी बना दूँगा
मैं तेरे गाल को गोलगप्पा बना दूँगी

मैं तुझे आसमान में फेंक दूँगा
मैं आसमान से तेरे ऊपर ही गिरूँगी

मैं घर में घुस जाऊँगा
डरपोक कहीं का....

कविता: श्याम सुशील
चित्र: तापोशी घोषाल
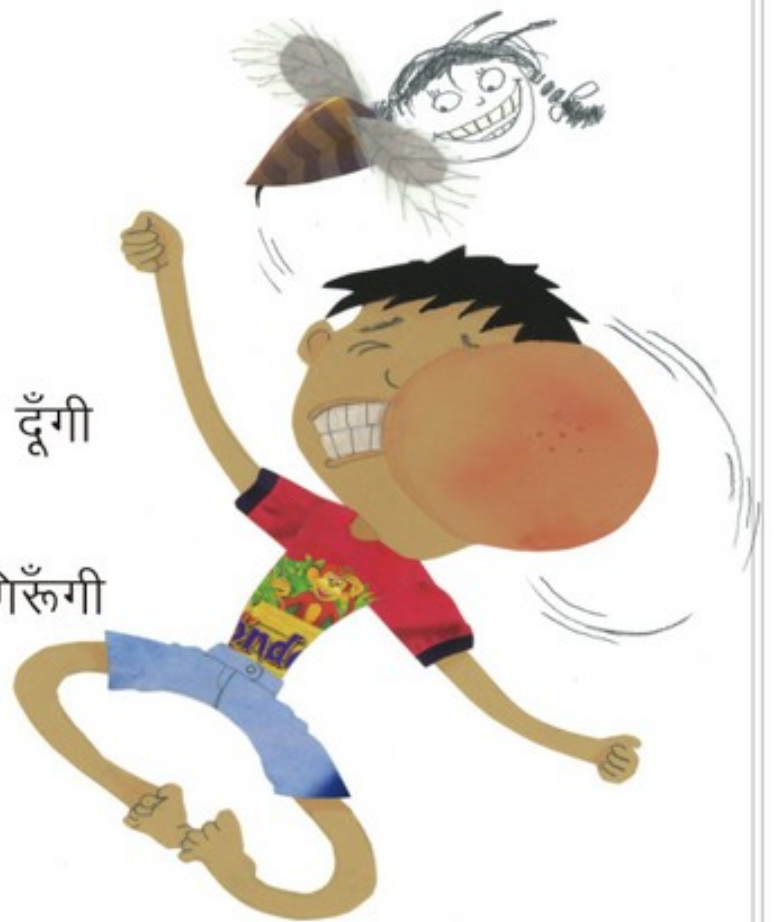
मम्मी का स्कूटर
स्कूटर पे निकली मम्मी की सवारी
मम्मी है हलकी और हैलमेट है भारी
पछाड़ा है ट्रक को, पछाड़ी है लॉरी
ऐसी दबंग है मम्मी हमारी
कि स्कूटर भी समझे है खुद को फरारी
कविता: नेहा सिंह
चित्र: सागर अरणकल्ले
एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

रॉकेट
पेंसिल को रॉकेट बनाकर
देखूँ बैठ उड़ेगा क्या
बच्चे टीचर मिलकर बोले,
हमको नहीं ले चलेगा क्या!
कविता: सपना मांगलिक
चित्र: हबीब अली
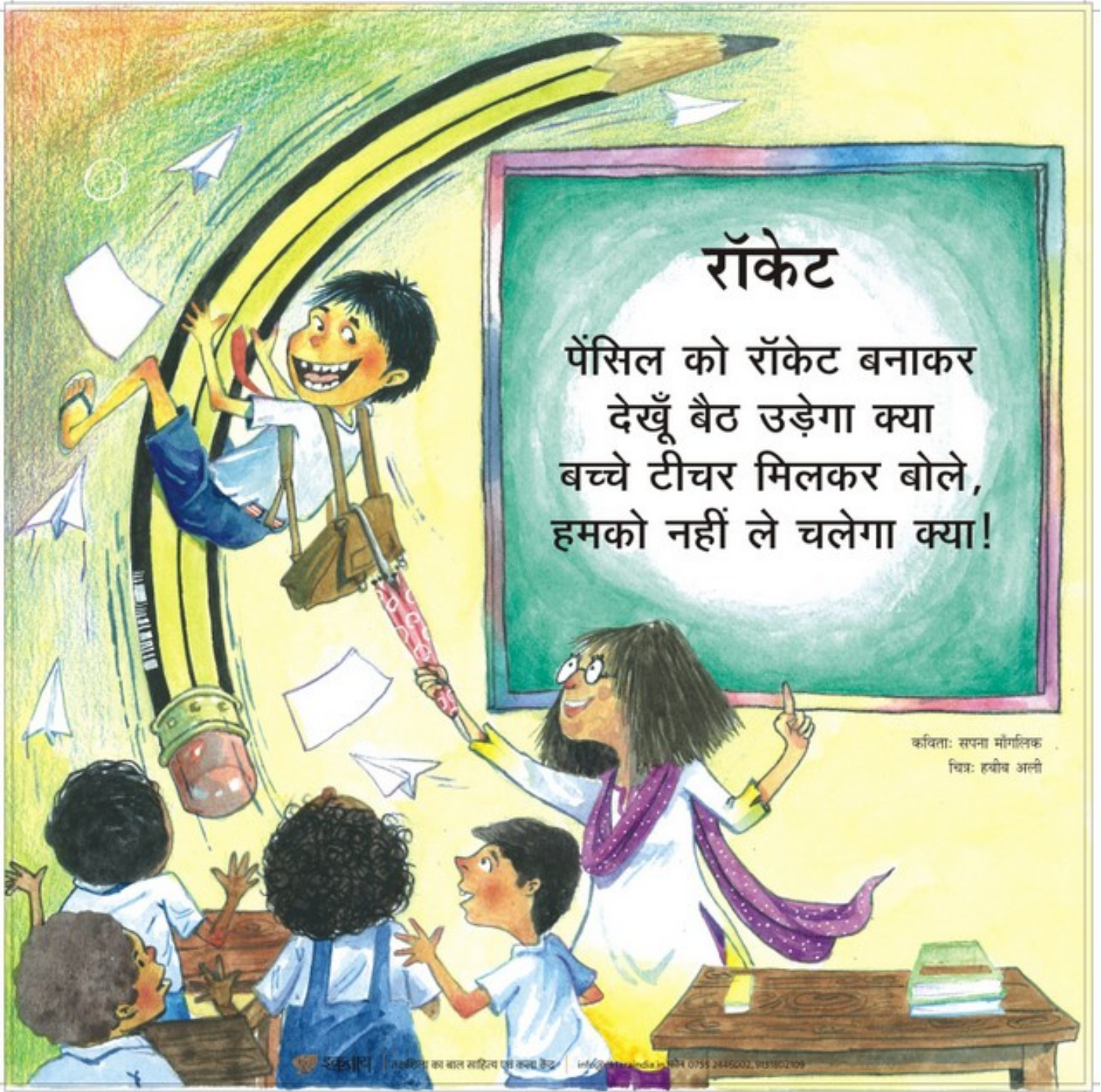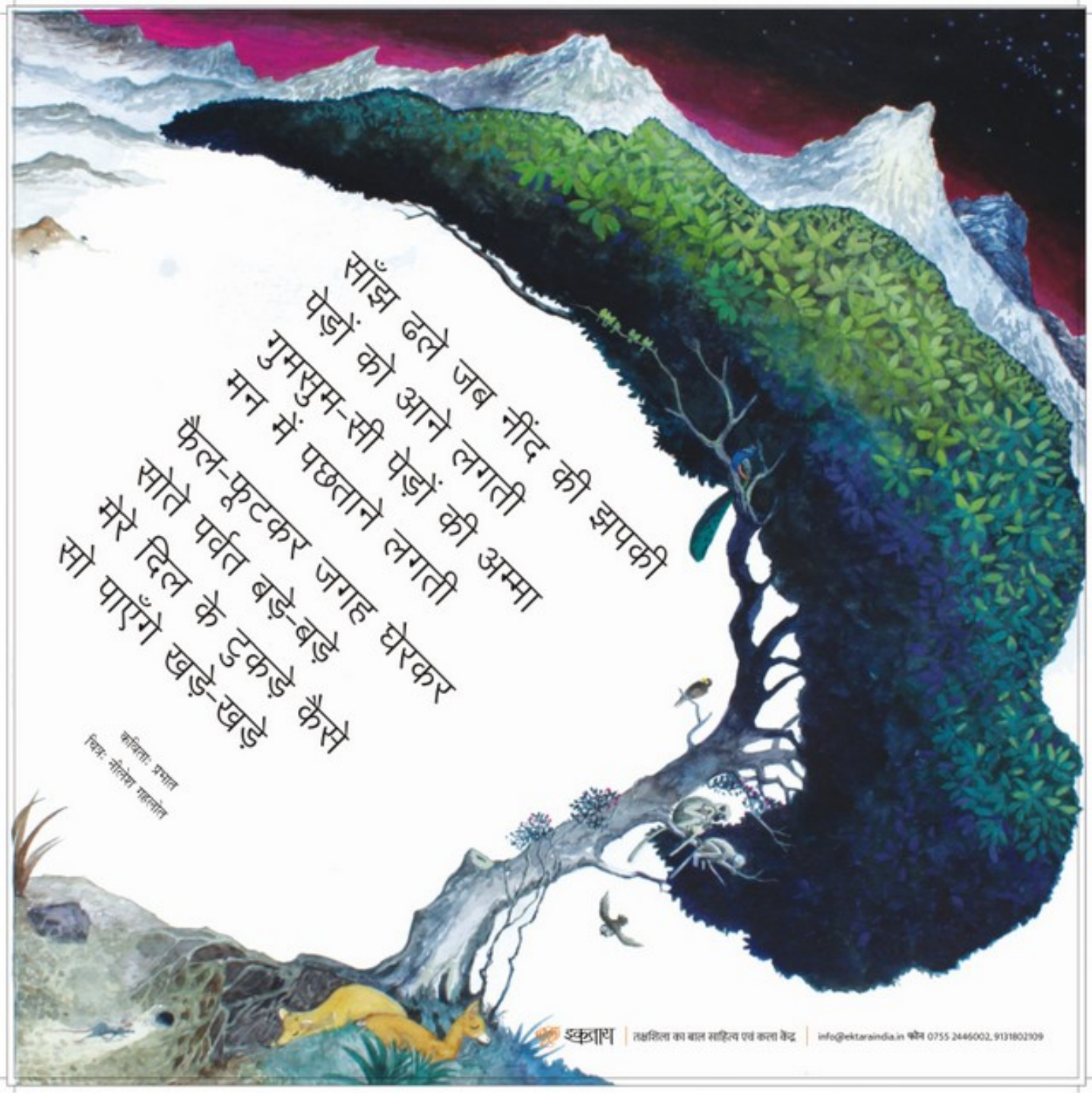
रात का समय था। महुआ टप-टप झर रहा था। नीचे एक साँप सरसराता हुआ घूम रहा था। महुए का एक फूल उसके सिर पर गिरा। साँप ने ऊपर देखा। फिर उसने महुए से कहा - टपके तो टपके, सिर को काहे फोड़े?

महुआ बोला - टेढ़े रे मेढ़े, रात को काहे को दौड़े?

साँप ऐसे ही इधर से उधर सरसराता रहा। महुआ ऐसे ही झरता रहा।

लोककथा प्रस्तुतिः प्रभात   चित्रः देवब्रत घोष
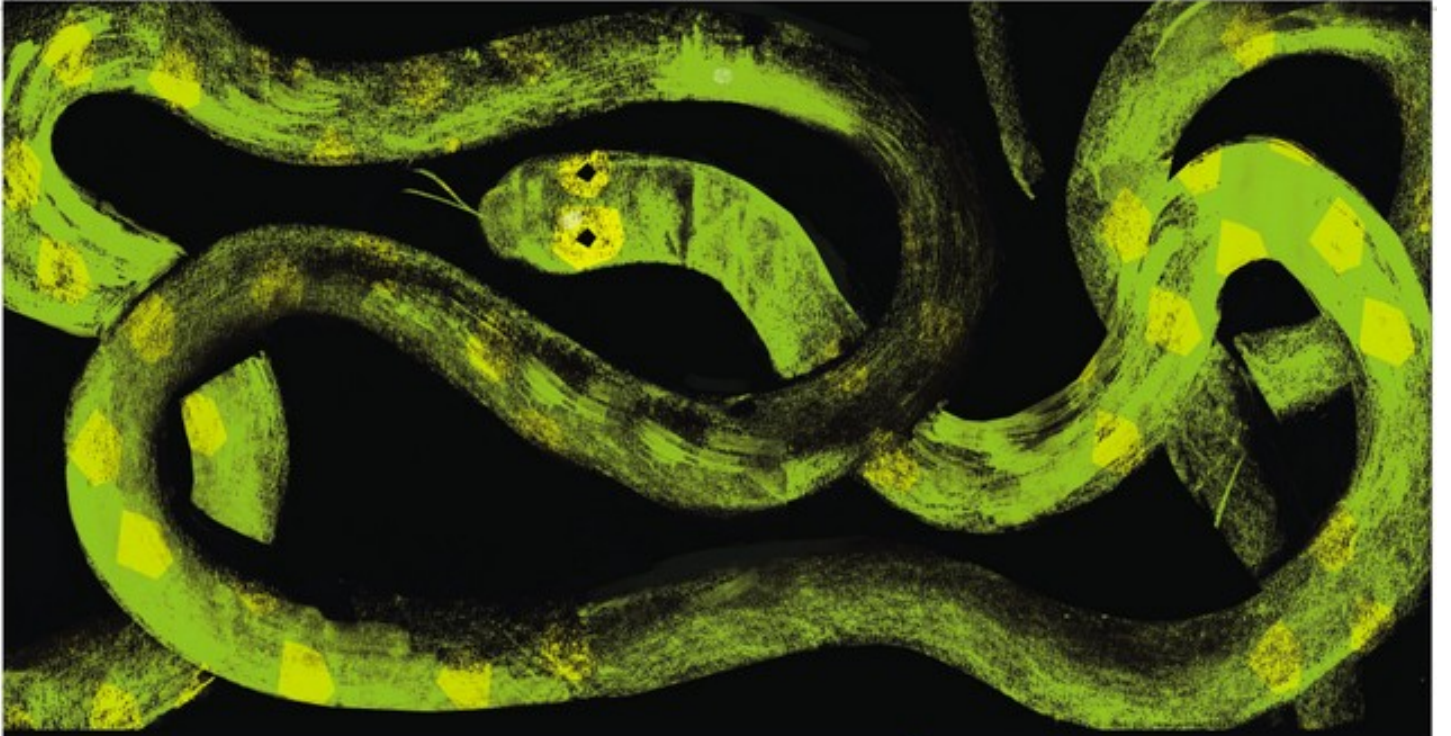
इधर से निकलूँ उधर से निकलूँ
साँप ने सोचा किधर से निकलूँ
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109
चित्र: प्रिया कुरियन

साँझ ढले जब नींद की झपकी
पेड़ों को आने लगती
गुमसुम-सी पेड़ों की अम्मा
मन में पछताने लगती
फैल-फूटकर जगह घेरकर
सोते पर्वत बड़े-बड़े
मेरे दिल के टुकड़े कैसे
सो पाएँगे खड़े-खड़े
कविता: प्रभात
चित्र: नीलेश गहलोत
एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

कोई मचल रहा है,
कोई फिसल रहा है,
कोई है बेकरार,
साँपों की अम्मा के दुखड़े हज़ार

आती किसी को छींकें,
जकड़े हैं कुछ के सीने,
कुछ को हुआ बुखार
साँपों की अम्मा के दुखड़े हज़ार

कविता: अरशद ख़ान
चित्र: तापोशी घोषाल

सिंघाड़ा चिंघाड़ा
फर फर तितली
मटर पे फिसली
चिक चिक चींटी
इंजन की सीटी
ताल में सिंघाड़ा
हाथी चिंघाड़ा
कविता: प्रभात
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
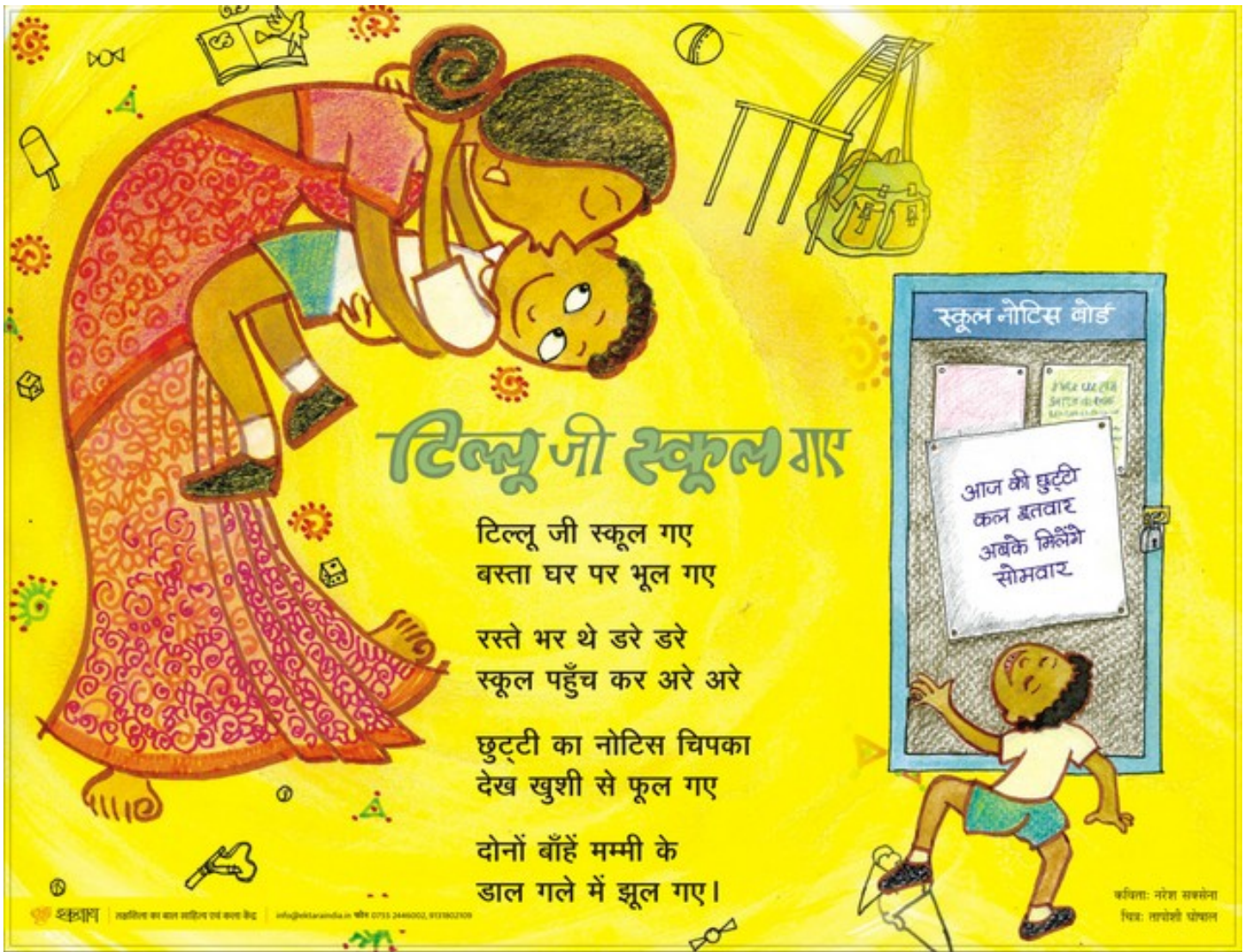
टिल्लू जी स्कूल गए
टिल्लू जी स्कूल गए
बस्ता घर पर भूल गए
रस्ते भर थे डरे डरे
स्कूल पहुँच कर अरे अरे
छुट्टी का नोटिस चिपका
देख खुशी से फूल गए
दोनों बाँहें मम्मी के
डाल गले में झूल गए।
स्कूल नोटिस बोर्ड
आज की छुट्टी
कल इतवार
अबके मिलेंगे
सोमवार
कविता: नरेश सक्सेना
चित्र: तापोशी घोषाल

तोते
बाघ दहाड़ा तो जंगल में
तोते उड़ गए
आँख घुमा तोतों ने पूछा
किसके उड़ गए?
कविता: प्रभात
चित्र: तापोशी घोषाल

उड़ गया हाथी
चींटी के आगे
हाथी खड़ा था
हाथी के पाँव पे
चींटा चढ़ा था
चींटी ने डाँटा-
नीचे आ जा!
चींटा बोला-
बाय-बाय टाटा!
चींटी को आया
ज़ोर का गुस्सा
घूर के उसने
चींटे को देखा
और पलटकर
मारी जो लात
उड़ गया हाथी
चींटे के साथ!
कविता: श्याम सुशील
चित्र: पार्थ सेनगुप्ता

ऊँट
रोज़ सबेरे कितने ऊँट
पीठ लाद ढेरों तरबूज़
धीरे-धीरे कहाँ चले
जब पहुँचेंगे पेड़ तले
गर्दन ऊँची कर खाएँगे
कड़वी नीम चबा जाएँगे
मालिक हाँकेगा जब उनको
बल बल बल बल गुस्साएँगे
कविता: सुधा चौहान
चित्र: नीलेश गहलोत
एकतारा | तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र | info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109

ऊँट
ऊँट बड़े तुम ऊँट-पटाँग!
गरदन लम्बी पूँछ ज़रा-सी
आँखें छोटी दाँत बड़े
ऊबड़-खाबड़ पीठ, ऊँघते
रहते अकसर खड़े-खड़े
बँधी गद्दियाँ हैं पैरों में
लेकिन झाड़ू जैसी टाँग।
कविता: बालस्वरूप राही
चित्र: सुजाशा दासगुप्ता
एकतारा
तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केंद्र
info@ektaraindia.in फोन 0755 2446002, 9131802109